पतझड़ क्यों ?

शरद का आगमन यहाँ,

पत्तों का झड़ना यहाँ,

मेरा मन-मस्तिष्क कहाँ?

यादों का बसेरा जहाँ |

इस ऋतुचक्र से प्रभावित,

मन हुआ जाता विचलित,

झड़ते हैं पत्ते क्यों?

सोचता हूँ मैं, आखिर क्यों?

कालचक्र का पाश है कि,

जीवन कि आवश्यकता,

इस विचार को लेकर मेरे,

मन में आज संग्राम है |

उत्तर कि चाह में,

दिशा कि खोज में,

भटका मैं चरों ओर,

मिला तब मैं स्वयं से |

नील-नभ कि छाया तले,

विविधता यूँ ही है बढे,

जिसे हम रात्रि कहें,

है भोर का संकेत लिए |

जन्म है तो मृत्यु है,

यही एक वास्तविकता है,

नव-प्रभात के उदय में,

झड़ते पत्तों का ही हाथ है |

कर्त्तव्य करके झड गए,

राहें नईं दिखा गए,

जीवन कि धड़कन में,

रक्त अपना वे दे गए |

इस सत्य का ज्ञान हुआ,

पूर्वज पत्तों का ध्यान हुआ,

मेरे इस नश्वर जीवन का,

मुझको अर्थ फिर साफ़ हुआ |

From: Sameer Khanedkar